

लहसुन की खेती

रोहताष सिंह भदौरिया¹, ज्ञानेन्द्र प्रताप तिवारी¹, सुशील कुमार¹, आदित्य प्रताप राठौर¹, सर्वेश त्रिपाठी¹ एवं ए के वर्मा²

¹कृषि विज्ञान केन्द्र जावरा, जिला रतलाम, मध्य प्रदेश

²केन्द्रीय शुष्क बागवानी संस्थान बीकानेर (राजस्थान)

लहसुन एक कन्द वाली मसाला वाली प्रमुख फसल है। इसमें एलसिन नामक तत्व पाया जाता है जिसके कारण इसकी एक खास प्रकार की गंध एवं तीखा स्वाद होता है। इसका इस्तेमाल गले तथा पेट सम्बन्धी बीमारियों में होता है। इसमें पाये जाने वाले सल्फर के यौगिक ही इसके तीखेस्वाद और गंध के लिए उत्तरदायी होते हैं, जैसे ऐलसन ए, ऐजोइन इत्यादि। यह एक नकदी फसल है तथा इसमें कुछ अन्य प्रमुख पौष्टिक तत्व पाए जाते हैं। इसका उपयोग आचार, चटनी, मसाले तथा सब्जियों में किया जाता है। इसका उपयोग हाई ब्लड प्रेशर, पेट के विकारों, पाचन विकृतियों, फेफड़े के लिये, कैंसर व गठिया की बीमारी, नपुंसकता तथा खून की बीमारी के लिए किया जाता है। इसमें जीवाणुरोधी तथा कैंसर विरोधी गुणों के कारण इसको अनेक बीमारियों के प्रयोग में लिया जाता है। म. प्र. में लहसून का क्षेत्रफल 60000 हे., उत्पादन 270 हजार मे. टन है। लहसुन की खेती मंदसौर, नीमच, रतलाम, धार, एवं उज्जैन के साथ-साथ प्रदेश के लगभग सभी जिलों में इसकी खेती की जा सकती है। आजकल इसका प्रसंस्करण कर

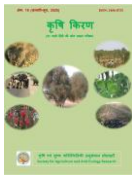
पावडर, पेस्ट, चिप्स तैयार करने हेतु प्रसंस्करण इकाईया म.प्र. में कार्यरत है।

जलवायु:-

लहसुन को मुख्य रूप से ठंडी जलवायु की फसल है। लहसुन के लिये गर्मी और सर्दी दोनों ही प्रकार के मौसम की आवश्यकता रहती है। छोटे दिन इसके कंद निर्माण के लिये अच्छे होते हैं। ज्यादा गर्मी और लम्बे दिन इसके कंद निर्माण के लिये उत्तम नहीं रहते हैं। लहसुन की खेती के लिये 29-35 डिग्री सेल्सियस तापमान, 10-12 घंटे का दिन का प्रकाश और 70% आद्रता उपयुक्त होती है

भूमि एवं खेत की तैयारी:-

इसके लिये अच्छी जल निकास वाली दोमट भूमि अच्छी होती है। भारी भूमि में इसके कंदों का विकास नहीं हो पाता है। मृदा का पी. एच. मान 6.5 से 7.5 उपयुक्त रहता है। एक जुताई मिट्टी पलट हल से तथा दो - तीन जुताइयां बख्खर या कल्टीवेटर से करके खेत को अच्छी तरह से तैयार करके भूमि को समतल बनाकर क्यारी एवं सिंचाई की नाली बनाई जानी चाहिए।



लहसुन की किस्में:-

यमुना सफेद 1 (जी-1)- यमुना सफेद 1 (जी-1) इसके बल्ब ठोस तथा बाह्य त्वचा चांदी की तरह सफेद होती है। कलिया क्रीम रंग की होती है। यह किस्म 150-160 दिनों में तैयार हो जाती है तथा पैदावार 150-160 क्विंटल प्रति हेक्टेयर हो जाती है।

यमुना सफेद 2 (जी-50)- बल्ब ठोस, त्वचा सफेद तथा कलिया क्रीम रंग की होती है। पैदावार 130-140 क्विंटल प्रति हेक्टेयर होती है। यह किस्म 165-170 दिनों में तैयारी हो जाती है। यह किस्म रोग जैसे बैंगनी धब्बा तथा झुलसा रोग के प्रति सहनशील होती है।

यमुना सफेद 3 (जी-282)- इसके बल्ब बड़े आकार का जिसका व्यास (4.76 से.मी.) तथा रंग सफेद होता है। कलिया क्रीम रंग की होती है। 15-16 कलिया प्रति बल्ब में होती है। यह किस्म 140-150 दिनों में तैयार हो जाती है। इसकी पैदावार 175-200 क्विंटल/ हेक्टेयर होती है। यह किस्म निर्यात की दृष्टि से बहुत ही अच्छी होती है।

यमुना सफेद 4 (जी-323)- इसके बल्ब सफेद बड़े आकार का जिसका (व्यास 4.5 से.मी.) क्लोव का रंग सफेद तथा कलिया क्रीम रंग की होती है। 18-23 कलिया प्रति बल्ब में होती है। यह किस्म 165-175 दिनों में तैयार हो जाती है। इसकी पैदावार 200-250 क्विंटल/ हेक्टेयर है। यह किस्म निर्यात की दृष्टि से बहुत ही अच्छी है।

प्रदेश में उक्त किस्मों के अलावा स्थानीय किस्में महादेव, अमलेटा आदि की भी किसान अपने स्तर पर सफलतापूर्वक खेती कर रहे हैं।

बुवाई का समय:-

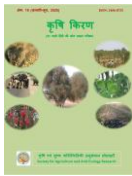
लहसुन की बुवाई का उपयुक्त समय अक्टूबर-नवम्बर होता है। लहसुन को मुख्य रूप से रबी के मौसम लगते हैं।

बीज एवं बुवाई:-

लहसुन की बुवाई हेतु स्वस्थ एवं बड़े आकार की शल्क कंदो (कलियों) का उपयोग किया जाता है। बीज 5-6 क्विंटल/ हेक्टेयर होती है। शल्ककंद के मध्य स्थित सीधी कलियों का उपयोग बुआई के लिए नहीं करना चाहिए। बुआई पूर्व कलियों को मैकोजेब/कार्बेडिज़म 2.5 ग्राम दवा के सममिश्रण के घोल से उपचारित करना चाहिए। लहसुन की बुआई कूड़ों में, छिड़काव या डिबलिंग विधि से की जाती है। कलियों को 5-7 से.मी. की गहराई में गाड़कर उपर से हलकी मिट्टी से ढक देना चाहिए। बोते समय कलियों के पतले हिस्से को उपर ही रखते हैं। बोते समय कलियों से कलियों की दूरी 8 से.मी. व कतारों की दूरी 15 से.मी. रखना उपयुक्त होता है। बड़े क्षेत्र में फसल की बोनी के लिये गार्लिक प्लान्टर का भी उपयोग किया जा सकता है।

खाद एवं उर्वरक:-

खाद व उर्वरक की मात्रा भूमि की उर्वरता पर निर्भर करती है। सामान्यतौर पर प्रति



हेक्टेयर 20-25 टन पकी गोबर या कम्पोस्ट या 5-8 टन वर्मी कम्पोस्ट, 100 कि.ग्रा. नत्रजन, 50 कि.ग्रा. फास्फोरस एवं 50 कि.ग्रा. पोटाश की आवश्यकता होती है। इसके लिए 175 कि.ग्रा. यूरिया, 109 कि.ग्रा., डाई अमोनियम फास्फेट एवं 83 कि.ग्रा. म्यूरेंट आफ पोटाश की जरूरत होती है। गोबर की खाद, डी.ए. पी. एवं पोटाश की पूरी मात्रा तथा यूरिया की आधी मात्रा खेत की अंतिम तैयारी के समय भूमि में मिला देनी चाहिए। शेष यूरिया की मात्रा को खड़ी फसल में 30-40 दिन बाद छिड़काव के साथ देनी चाहिए। सूक्ष्म पोषक तत्वों की मात्रा का उपयोग करने से उपज में वृद्धि मिलती है। 25 कि.ग्रा. जिन्क सल्फेट प्रति हेक्टेयर 3 साल में एक बार उपयोग करना चाहिए। टपक सिंचाई एवं फर्टिगेशन का प्रयोग करने से उपज में वृद्धि होती है जल घुलनशील उर्वरकों का प्रयोग टपक सिंचाई के माध्यम से करें।

सिंचाई एवं जल निकास:-

बुआई के तत्काल बाद हल्की सिंचाई कर देनी चाहिए। शेष समय में वानस्पतिक वृद्धि के समय 7-8 दिन के अंतराल पर तथा मृदा में नमी के आधार पर सिंचाई करें। सिंचाई हमेशा हल्की एवं खेत में पानी भरने नहीं देना चाहिए। अधिक अंतराल पर सिंचाई करने से कलियां बिखर जाती हैं।

निराई गुड़ाई एवं खरपतवार नियंत्रण:-

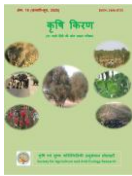
- जड़ों में उचित वायु संचार हेतु खुरपी या कुदाली द्वारा बोने के 25-30 दिन बाद प्रथम निराई-गुड़ाई एवं दूसरी निराई-गुड़ाई 45-50 दिन बाद करनी चाहिए।
- खरपतवार नियंत्रण हेतु प्लुक्लोरोलिन 1 कि.ग्रा. सक्रिय तत्व बुआई के पूर्व या पेड़ामेथिलीन 1 कि.ग्रा. सक्रिय तत्व बुआई बाद अंकुरण पूर्व 500 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करना चाहिए।

कटाई:-

नोट:- लहसुन 50: गर्दन गिरावट के स्तर पर काटा जाना चाहिए।

खुदाई एवं लहसुन का सुखाना:- जिस समय पौधों की पत्तियाँ पीली पड़ जायें और सूखने लग जाये सिंचाई बन्द कर देनी चाहिए। इसके बाद गाँठों को 3-4 दिनों तक छाया में सुखा लेते हैं। फिर 2 से 2.25 से.मी. छोड़कर पत्तियों को कन्दों से अलग कर लेते हैं। कन्दों को साधारण भण्डारण में पतली तह में रखते हैं। ध्यान रखें कि फर्श पर नमी न हो। लहसुन पत्तियों के साथ जुड़े बांधकर भण्डारण किया जाता है।

छटाई:-लहसुन को बाजार या भण्डारण में रखने के लिए उनकी अच्छी प्रकार छटाई रखने से अधिक से अधिक लाभ मिलता है तथा भण्डारण में हानि कम होती है इससे कटे फटे बीमारी तथा कीड़ों से प्रभावित लहसुन छांटकर अलग कर लेते हैं।



उपज:-

लहसुन की उपज उसकी जातियों भूमि और फसल की देखरेख पर निर्भर करती है प्रति हेक्टेयर 150 से 200 किं्वटल उपज मिल जाती है।

भण्डारण:-

अच्छी प्रक्रिया से सुखाये गये लहसनु को उनकी छटाई कर के साधारण हवादार घरों में रख सकते हैं। 5-6 महीने भण्डारण से 15-20 प्रतिशत तक का नुकसान मुख्य रूप से सूखने से होता है। पत्तियों सहित बण्डल बनाकर रखने से कम हानि होती है।